

# गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)  
(शिक्षा संकाय)



बी.एड द्विवर्षीय पाठ्यक्रम (प्रथम वर्ष)  
बचपन एवं अभिवृद्धि

सत्र : 20.25..-20.26..

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम सुन्दरी

शिक्षण विषय (बचपन एवं अभिवृद्धि)

महाविद्यालय अनुक्रमांक

विश्वविद्यालय द्वारा आवंटित अनुक्रमांक

①

विकास और वृद्धि के अवधारणा का वर्णन कीजिए।

विकास के विभिन्न चरणों में संज्ञानात्मक और

भावनात्मक विकास के प्रमुख पहलुओं की

विस्तृत व्याख्या कीजिए।

## विकास और वृद्धि की अवधारणा का वर्णन :-

वृद्धि (Growth) का अर्थ शारीरिक आकार कृपाई वजन और कोशिकाओं की संख्या में होने वाली मात्रात्मक (measurable) वृद्धि है, जो एक निश्चित आयु के बाद रुक जाती है।

दूसरी ओर विकास (Development) एक व्यापक प्रक्रिया है, जो शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक परिवर्तनों के माध्यम से जीवन भर निरंतर चलती रहती है, जो कार्यक्षमता में सुधार लाती है।

गैरीसन एवं अन्य के अनुसार — "जब बालक विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में प्रवेश करता है, तब हम उसमें कुछ परिवर्तन देखते हैं। ये परिवर्तन निश्चित सिद्धांतों के अनुसार होता है। इन्हीं को विकास का सिद्धान्त कहा जाता है।"

वृद्धि तथा विकास के संबंध में मनोवैज्ञानिकों के द्वारा अनेक अध्ययन किए गए हैं। इन अध्ययनों से सिद्ध हो गया है कि वृद्धि तथा निश्चित सिद्धांतों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। वृद्धि एवं विकास के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं।

वृद्धि से तात्पर्य मानव शरीर के अंगों के आकार, भार में वृद्धि के लिए किया जाता है। मनुष्य की वृद्धि एक निश्चित आयु तक ही होती है। विकास नियमित और सीमित नहीं है वरन् इसमें पौढ़ावस्था के लक्ष्य के ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निश्चित होता है।

## विकास की अवधारणा :-

परिवर्तन ही 'विकास' है। वास्तव में विकास सम्पूर्ण अभिवृद्धियों का संगठन है। इसके कारण बालक की कार्यक्षमता और कुशलता में प्रगति होती है। उदाहरण के लिये - पैरों की वृद्धि, हाड़ की वृद्धि इनका सम्मिलित रूप विकास कहलाता है। इस विकास से ही शारीरिक क्षमता में परिवर्तन आता है।

शिक्षा बालक के लिये है न कि बालक शिक्षा के लिये। शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बालक है। बालक का कैसे होता है। अभिवृद्धि के साथ-साथ बालक में विकास भी होता जाता है। विकास - पर्यन्त क्रमानुसार चलने वाली प्रक्रिया है। हरलॉक के अनुसार - "विकास अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है इसकी अपेक्षा इसमें परिपक्वतावस्था के लक्ष्य की ओर, परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है। विकास के परिणाम स्वरूप व्यक्ति में नई-नई विशेषताएँ और नई-नई योग्यताएँ प्रकट होती हैं।"

टॉयलर के अनुसार - विकास एक दिशा को ओर जाने वाला मार्ग है, बालक में होने वाले परिवर्तनों को सूक्ष्म दृष्टि से देखने का प्रयास किया गया है। बालक का विकास निरन्तरता में होता रहता है। बालक में ही शिशु से लेकर प्रौढ़ तक सदा परिवर्तन होता रहता है। कोई व्यक्ति जैसा आज है, वैसा कल नहीं रहेगा यही नहीं इस क्षण व्यक्ति जैसा है, दूसरे ही क्षण वह वैसा नहीं रहेगा। कुछ परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं, कुछ अज्ञात रूप में होते रहते हैं, किन्तु परिवर्तन निरन्तर होते रहते हैं।

विकास के विभिन्न चरणों (शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था) में संज्ञानात्मक (सोच / सीखना) और भावनात्मक (संवेग / भावनाएँ) विकास क्रमिक रूप से होता है।

शैशवावस्था - में इंद्रिय-आधारित ज्ञान और विश्वास  
 बाल्यावस्था - में अमूर्त सोच भाषा तक और  
 आत्म-जागरूकता, और किशोरावस्था - में अमूर्त सोच  
 और पहचान का विकास प्रमुख पहलू है, जो सामाजिक-सांस्कृतिक संकेतों से प्रभावित होते हैं।  
 विकास के विभिन्न चरणों में प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं;

● गुणात्मक :- विकास का मतलब कार्यक्षमता और व्यवहार में सुधार से है, जैसे बेहतर वास्तुचित करना या समस्याओं को हल करना Liv Hospital!

● निरंतर :- यह जन्म से लेकर मृत्यु तक चलने वाली एक जीवन भर की प्रक्रिया है Drishhti Teaching Exams!

● समग्र :- यह शारीरिक, संज्ञानात्मक (मानसिक) सामाजिक और भावनात्मक सभी पहलुओं को शामिल करती है।

## वृद्धि की अवधारणा :-

वृद्धि का अर्थ शारीरिक आकार, ऊँचाई, वजन और कोशिकाओं की संख्या में होने वाली मात्रात्मक वृद्धि है, जो एक निश्चित आयु के बाद रुक जाती है। वृद्धि शरीर के अंगों के आकार भर, में वृद्धि के लिए किया जाता है, उसके शारीरिक अंगों में वाह्य और आंतरिक दोनों अंग होते हैं।

वाह्य अंगों में घाँव पैर, सिर, और आन्तरिक अंगों में यकृत, आहारनाल, मास्तिष्क आदि आते हैं।

मनुष्य का यह वृद्धि एक निश्चित आयु तक ही होती है। मानव के शरीर में होने वाली वृद्धि

मापा व तौला जा सकता है।

फ्रेंक के अनुसार— वृद्धि से लातय कोशिकाओं में होने वाली वृद्धि से होती है, जैसे लम्बाई और भार में वृद्धि।

### • मात्रात्मक :-

वृद्धि को मापा जा सकता है, जैसे शरीर के वजन में वृद्धि या लम्बाई बढ़ना।

### • सीमित :-

यह जीवन भर नहीं चलती, परिपक्वता के साथ रुक जाती है, आमतौर पर किशोरावस्था के बाद।

### • शारीरिक :-

यह केवल शारीरिक परिवर्तनों तक सीमित है।

## संज्ञानात्मक विकास की पहलुओं की व्याख्या :-

संज्ञानात्मक विकास का पहला सम्बंध उन तरीकों से होता है जिनसे बालक की आन्तरिक मानसिक शक्तियाँ अभिवृद्धि विकसित और अक्सर के अनुसार प्रयुक्त होती हैं - जैसे समस्या समाधान स्मृति और भाषा। स्टॉट (Stott) के अनुसार - "संज्ञानात्मक क्षमता वातावरण में विचारपूर्वक प्रभावपूर्ण ढंग से तथा सुविधाजनक तरीके से कार्य करने की क्षमता है।" बच्चे अपने भौतिक व सामाजिक वातावरण से प्रत्यक्षीकरण कर अनुभव प्राप्त करता है और अंत में समाशोषण हेतु तादात्म्यकरण स्थापित करता है। तादात्म्यकरण एक स्वचालित प्रक्रिया है जो बच्चे को विकास की ओर अग्रसर करता है।

## शैशवास्था संज्ञानात्मक विकास :-

शैशवास्था में संज्ञानात्मक

विकास ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से होता है। शिशु अपने आस-पास के वातावरण में जिन वस्तुओं को देखता है और जिन वस्तुओं के संपर्क में आता है उन्हें जानने का प्रयास करता है। इस अवस्था में मानसिक विकास की गति तीव्र होती है।

शैशवास्था में संज्ञानात्मक विकास पर कई बातों का प्रभाव पड़ता है।

- (i) बच्चे के पालन पोषण का तरीका।
- (ii) आसपास का पर्यावरण।
- (iii) परिवेश की सामाजिक व मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ आदि।

## बाल्यावस्था में संज्ञानात्मक विकास :-

- भी मानसिक विकास की गति तीव्र होती है। बाल्यावस्था में बालक में सद्य प्रवृत्तियों तथा मूल प्रवृत्तियों का विकास हो जाता है। स्मरण शक्ति विकसित होने लगती है। जिज्ञासा भी उत्पन्न हो जाती है, उसकी रुचियों का विस्तार होने लगता है। सूक्ष्म चिन्तन आरम्भ हो जाता है। किसी भी समस्या के कारण तथा निदान खोजने का प्रयास करता है।
- 6 वर्ष बालक में दायें-बायें का ज्ञान 13-14 वस्तुओं को गिना तथा समस्या समाधान है।
  - 7 वर्ष का बालक दो वस्तुओं में अंतर कर सकता है।
  - 8 वर्ष की आयु में वह 16-17 शब्दों के वाक्यों को दोहरा सकता है।
  - 9 वर्ष की आयु में वह दिन, तारीख व समय का सही ज्ञान प्राप्त कर लेता है।
  - 10 वर्ष की अवस्था में छोटे-छोटे बालकों की क्रियाओं को बता सकता है। 60-70 शब्दों को दोहरा सकता है। 11 वर्ष की आयु में वह समानता तुलना, भिन्नता तथा विभेद कर सकता है।
  - 12 वर्ष की आयु में वह किसी बात की कारण सहित व्याख्या कर सकता है।

## किशोरावस्था में संज्ञानात्मक विकास :-

परिपक्वावस्था की अवस्था है। संज्ञानात्मक विकास के लिये उन्हें इस अवस्था में उचित परामर्श व दिशा बोध की आवश्यकता होती है। इस समय बाल्यावस्था की चंचलता समाप्त हो जाती है। तीव्र स्मरण शक्ति विकास हो जाती है, स्टेन की क्षमता और अधिक बढ़ जाती है। कल्पना की शक्ति विकसित हो जाती है। इसके द्वारा वह अपनी आंतरिक शक्तियों का विकास करता है। कल्पना के विकास में लड़के-लड़कियों से आगे रहते हैं।

### • संज्ञानात्मक क्षमता का प्रभाव :-

परीक्षण में प्रश्नों को समझने की क्षमता (Cognitive Ability) कभी-कभी व्यक्तित्व के बजाय क्षमता को मापती है। संक्षेप में व्यक्तित्व मापन एक उपयोगी उपकरण है, लेकिन इसकी वैज्ञानिक सटीकता और मानवीय व्यवहार की पटिलता को पूर्णतः पकड़ने की क्षमता सीमित है। इन्हें एकमात्र निर्णायक साधन न मानकर अन्य साधनों के साथ उपयोग किया जाना चाहिए।

• संज्ञानात्मक :- 'पियाजे' के अनुसार यह संवेदी-पेशीय चरण (Sensorimotor) है जहाँ शिशु इन्द्रियों और शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से सीखते हैं वे वस्तु स्थायित्व (Object permanence) समझते हैं।

## भावनात्मक विकास की पहलुओं की व्याख्या :-

भावनात्मक विकास एक सतत प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत भावनाओं को पहचानने, समझने, व्यक्त करने और उन्हें प्रबंधित करने की क्षमता का विकास होता है, जो स्वस्थ रिश्तों और मानसिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। इसके प्रमुख पहलुओं में भाव, जागरूकता, भावनात्मक नियंत्रण, सहानुभूति, और सामाजिक कौशल शामिल हैं। यह प्रक्रिया विकास शैशवावस्था से शुरू होकर किशोरावस्था और वयस्कता तक चलता है, जिसमें बच्चा दोस्तों के साथ तालमेल खोजेगी। जैसी जितनी भावनाओं को पहचानना, और विपरीत परिस्थितियों से निपटना सीखाता है।

### ● भावनात्मक विकास की प्रक्रिया :-

यह विकास शैशवावस्था के शुरू होकर किशोरावस्था और वयस्कता तक चलता है, जिसमें बच्चा दोस्तों के साथ तालमेल जितनी भावनाओं को पहचानना सीखता है जिससे बच्चा अपने व्यवहार और भावनाओं को समझना।

### ● सामाजिक और भावनात्मक बंधन :-

करने वालों (माता-पिता) के (Attachment); देखभाल सुरक्षित लगाव, जो भावनात्मक सुरक्षा और विश्वास का आधार है। साथ एक

## भावनात्मक विकास के प्रमुख पहलु :-

### भावनाओं की पहचान और समझ (Recognition of Emotions) :-

यह स्वयं की ओर दूसरों की भावनाओं (खुशी, गुस्सा, उदासी) को पहचानने की क्षमता है।

### भावनात्मक नियमन (Emotional Regulation) :-

विभिन्न परिस्थितियों में अपनी भावनाओं को प्रबंधित करने की क्षमता, जैसे कि गुस्से को नियंत्रित करना या तनाव में शांत रहना।

### भावनात्मक अभिव्यक्ति (Emotional Expression) :-

अपनी भावनाओं की सही तरीके से व्यक्त करना, जो बच्चे में आत्मविश्वास और सामाजिक क्षमता बढ़ता है।

### सहानुभूति (Empathy) :-

दूसरे शब्दों में भावनाओं और दृष्टिकोण को समझने और उनके प्रति संवेदनशील होने की क्षमता।

### आत्म-जागरूकता (Self-Awareness) :-

अपने व्यवहार और भावनाओं के कारण को समझना।

11

व्यक्तित्व की अवधारणा का गहन अध्ययन  
करें , और व्यक्तित्व को मापने की विभिन्न  
विधियों का आलोचनात्मक विश्लेषण करें ।

## व्यक्तित्व की अवधारणा :-

(Concept of Personality)

व्यक्तित्व एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा है। इसका प्रयोग लोगों द्वारा प्रायः बड़े सही अर्थ में किया जाता है। किसी व्यक्ति के रंग रूप, शारीरिक वनावट, वेशभूषा, मोन्दर्य आदि बाह्य लक्षणों के आधार पर प्रायः उसके व्यक्तित्व के बारे में अर्थ लगा लिया जाता है। इस तरह व्यक्ति के शरीर की बाहरी दिखावट को उसका व्यक्तित्व के भारतीय और पाश्चात्य अवधारणाओं में भी काफी अन्तर है। विश्व के अनेक धर्मों, मतों के साथ-साथ साहित्य, कला और संस्कृति में व्यक्तित्व सम्बंधी अवधारणाएँ पाई जाती हैं। परन्तु व्यक्तित्व जैसे जटिल सम्प्रत्यय को पूर्णरूपेण समझना सम्भव नहीं है। शिक्षा जगत् में 'व्यक्तित्व' शब्द का विशेष और महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ही बालक के व्यक्तित्व का संतुलित विकास करना है। न केवल विद्यार्थी, वरन् शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत सभी व्यक्तियों के व्यक्तित्व का उनकी कार्य प्रणाली और कार्य क्षमता एवं कार्य सफलता पर असर पड़ता है। विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा प्रशासकों के व्यक्तित्व का रकीकृत ढंग से विकसित होने शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। यही कारण है कि शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यक्तित्व के अध्ययन आवश्यक बल व ध्यान दिया गया है। व्यक्तित्व सम्प्रत्यय, विकास और व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में

बहुत-से मनोवैज्ञानिकों ने अध्ययन किया तथा विभिन्न प्रकार से व्यक्तित्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया, व्यक्तित्व मापन की अनेकों विधियाँ विकसित की। प्रस्तुत अध्याय में शिक्षा की दृष्टि से व्यक्तित्व के अर्थ, सिद्धान्त और प्रकार आदि की चर्चा की जा रही है।

### व्यक्तित्व का अर्थ :- (Meaning of Personality)

साधारण बोलचाल में व्यक्तित्व शब्द किसी ऐसे विशेष गुण की ओर संकेत करता है, जिसे सभी लोग विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करने तथा पारस्परिक सम्बन्धों की दृष्टि से विशेष महत्व देते हैं।

1. व्यक्तित्व विशिष्ट होता है। प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व दूसरे से भिन्न होता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से समायोजन करता है।

2. व्यक्तित्व की दूसरी विशेषता उसकी 'आत्म-चेतना' (Self consciousness) है। जब व्यक्ति में 'आत्म-चेतना' जागृत होती है, तभी उसका व्यक्तित्व अस्तित्व में आता है। 'एच. आर. भट्टिया' के अनुसार — "हम कुत्ते को व्यक्तित्व से विभूषित नहीं करते और यहाँ तक कि एक छोटे बच्चे में भी 'आत्म-चेतना' था। व्यक्तिगत परिचय भय का भाव उदय न होने पर व्यक्तित्व जैसी वस्तु नहीं होती।"

3. व्यक्तित्व अनुवांशिकता और वातावरण की संयुक्त उपज है। बालक के व्यक्तित्व के विकास को दोनों प्रभावित करता है।

## व्यक्तित्व की परिभाषाएँ :-

### (Definitions of Personality)

'वाटसन' के अनुसार — "विश्वसनीय सूचना प्राप्त करने के दृष्टिकोण से काफी लंबे समय तक वास्तविक निरीक्षण या अवलोकन करने के पश्चात् व्यक्ति में भी क्रियाएँ अथवा व्यवहार का जो भी रूप पाया जाता है, उसे उसका व्यक्तित्व कहा जाता है।"

'मन' के अनुसार — "व्यक्तित्व व्यक्ति की संरचना, व्यवहार के ढंगों, रुचियों, अभिवृत्तियों, क्षमताओं, योग्यताओं एवं अभियोग्यताओं के विलक्षण संगठन के रूप में परिभाषित किया जा जाता है।"

'जेम्स ड्रेवर' के अनुसार — "व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के सुसंगठित एवं गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है। उसे वह अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान-प्रदान में व्यक्त करता है।"

'वीसेन्ज' के अनुसार — "व्यक्तित्व मनुष्य की आदतों, दृष्टिकोणों तथा विशेषताओं का संगठन है। यह प्राणशास्त्रीय, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारणों से संयुक्त कार्य द्वारा उत्पन्न होता है।"

'डेशील' के अनुसार — "किसी व्यक्ति के संगठित व्यवहार का सम्पूर्ण चित्र उसका व्यक्तित्व होता है।"

'गिलफोर्ड' के अनुसार — "व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।"

व्यक्तित्व की अवधारणा का गहन अध्ययन अर्थ और परिभाषा; व्यक्तित्व (लैटिन शब्द 'पर्सोना' से) केवल बाहरी दिखावा नहीं है, बल्कि यह आंतरिक गुणों, रुचियों, क्षमताओं, आदतों और व्यवहारों का एक स्कीकृत रूप है।  
 प्रकृति; स्थिरता और परिवर्तन व्यक्तित्व में एक निश्चित प्रकार का व्यवहार होता है, लेकिन समय और परिस्थितियों के साथ वह विकसित भी होता है। मनो-आारीरिक तंत्र यह आारीरिक बनावट (जैसे-ब्रेडन का प्रकार सिद्धांत) और यह मनोवैज्ञानिक गुणों का संगम है।  
 अनुशासन- हर व्यक्ति का व्यक्तित्व विशिष्ट होता है।

व्यक्तित्व के सिद्धान्त :- प्रकार सिद्धांत (Type Theory)  
 व्यक्तित्व को विभिन्न श्रेणियों में बाटना (जैसे- युग का अंतर्मुखी-बहिर्मुखी सिद्धांत)।  
 गुण सिद्धान्त- व्यक्तित्व को विशिष्ट विशेषताओं (जैसे- ईमानदारी, मिलनसारिता) के संयोजन के रूप में देखना।

वहुआयामी :-

यह व्यवहार (Behavior), संज्ञान (Cognition), और भावनात्मक पैटर्न (Emotional patterns) का संयोजन है।

स्थिरता :-

हालांकि यह अनुभव के साथ बदल सकता है, व्यक्तित्व आमतौर पर समय के साथ स्थिर रहता है।

## व्यक्तित्व का मापन :-

### (Measurement of Personality)

व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके गुणों का संगठन है। उसके समस्त गुणों या लक्षणों का समन्वित रूप है। ये गुण कितने संगठित हैं, अथवा विसंगठित इसका पता व्यक्तित्व के मापन द्वारा लगाया जा सकता है। जिसके द्वारा हम व्यक्ति के शील-गुणों का पता लगाते हैं। कि व्यक्ति का कौन सा शीलगुण कमजोर है जिसके कारण उसे वातावरण के समाधान में कठिनाई हो रही है। व्यक्तित्व (Personality) व्यक्ति के सोचने, महसूस करने और पैटर्न को संदर्भित करता है, जो आंतरिक और बाह्य गुणों का एक जटिल मिश्रण है। यह शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विशेषताओं का दर्पण है। इसके मापन के मुख्य रूप से आत्म-रिपोर्ट, प्रेक्षणीय तकनीकें और व्यवहार अवलोकन विधियाँ अपनाई जाती हैं। जो व्यक्ति के अचूक गुणों को उजागर करने में मदद करती हैं, हालांकि प्रत्येक की अपनी सीमाएँ हैं।

व्यक्तित्व मापन एक दुरुह कार्य है क्योंकि इसकी विषयवस्तु एक व्यक्ति होता है जिसके शील-गुण सदैव एक जैसे नहीं होते बल्कि समयानुसार बदलते रहते हैं। अतः इसका मापन शत-प्रतिशत नहीं किया जा सकता फिर भी मनोवैज्ञानिकों ने प्राचीन काल से ही व्यक्तित्व मापन का प्रयास किया है।

व्यक्तित्व मापन की अनेकों विधियों का निर्माण किया गया है जिसके द्वारा बहुत हद तक व्यक्तित्व को मापा जा सकता है व्यक्तित्व को मापने के लिए किसी एक विधि को उपयोग में लाकर मापना कठिन होता है। इसे मापने के लिए हमें कई विधियों का भी चयन एक साथ करना पड़ सकता है। व्यक्तित्व मापन की समस्त विधियों को अध्ययन की सुविधा के लिए निम्नांकित प्रमुख भागों में बाँटा गया है।

1. व्यक्तित्व आकिकारिका (Personality Inventories)  
प्रश्नावली।
2. प्रक्षेपक विधि (Projective Techniques)
  - (i) शब्द सम्बन्ध विधि
  - (ii) रोशार्क विधि
  - (iii) थिमेंटिक विधि
3. निरीक्षण विधि (Observation method)
  - (i) साक्षात्कार
  - (ii) रेंटिंग स्केल
4. व्यक्ति इतिहास विधि (Case study method)
5. मोशियोग्राम
6. मनोविश्लेषण विधि (Psychoanalytic method)

## व्यक्तित्व को मापने की विधियों का भालोचनात्मक विश्लेषण :-

### 1. व्यक्तित्व आधिकारिक :-

व्यक्तित्व आधिकारिक व्यक्तित्व मापन की प्रमुख व प्रचलित विधि है। इसके द्वारा व्यक्तित्व के समस्त पहलुओं का मापन किया जाता है, जिसे रेटिंग-स्केल, इन्टरव्यू आदि निरीक्षण विधियों द्वारा नहीं मापा जा सकता। व्यक्ति की संवेगात्मक अस्थिरता को मापने तथा उसके कारण को जानकर रोग का निदान इसके द्वारा किया जाता है। इसमें व्यक्ति के कुछ खास शीलगुण से सम्बंधित जानकारी दी गई है।

### 2. निरीक्षण / अवलोकन विधि :-

अवलोकन विधि अनुसंधान की एक महत्वपूर्ण विधि है। इसमें निरीक्षण कर्ता वास्तविक और प्राकृतिक स्थिति में व्यक्तियों के व्यवहार तथा क्रियाकलाप का ध्यान पूर्वक अवलोकन करता है। तथा उनकी क्रियाओं का विश्लेषण कर उनके व्यक्तित्व के विषय में एक निश्चित निष्कर्ष निकालता है। आज के मनोवैज्ञानिक या विद्वान अनेक ही रोगों की परीक्षण अथवा अवलोकन विधि का प्रयोग रोगी के हाव-भाव व मुख्याभिव्यक्त परखने में किया जाता है। आज भी अन्य क्षेत्रों की तरह शिक्षा में भी अवलोकन का अन्य विधियों से अधिक उपयोग होता है।

### 3. साक्षात्कार विधि :-

साक्षात्कार व्यक्तिगत मापन की सबसे अधिक प्रचलित व व्यवहारिक विधि मानी जाती है। इस विधि में साक्षात्कार कर्ता आमने-सामने (Face to Face) की परिस्थिति (Situation) में उत्तर के माध्यम से उसका आंखों से आंखों के विषय में आंकलन करता है।

### 4. रेटिंग विधि :-

व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न शैलियों के मापन के लिए ब्रेणी मूल्यांकन विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि में व्यक्ति के किसी गुण विशेष या कार्यकुशलता का मूल्यांकन उसके सम्पर्क में रहने वाले लोगों के माध्यम से कराया जाता है। इसके द्वारा सर्वाधिक लोकप्रिय व्यक्ति, जनप्रिय नेता आदि का पता लगाया जाता है।

### 5. सोशियोग्राम विधि :-

सोशियोग्राम विधि का प्रयोग समूह की सामाजिक रचना को करने के लिए किया जाता है। इस विधि का प्रतिपादन मुनेरा (Munera) ने सन् 1934 में किया था। इस विधि के द्वारा किसी विशेष क्षेत्र में समूह के सदस्यों का सामाजिक स्तर का पता लगाया जाता है। इस विधि का सफलता के लिए आवश्यक है कि परीक्षण पूर्ण प्रशिक्षित हो तभी सही निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

6. व्यक्ति इतिहास विधि :-

व्यक्ति इतिहास विधि व्यक्ति द्वारा एक प्रमुख विधि है। इस विधि के मापन की एक प्रमुख विधि है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति के जीवन इतिहास, वंश, परम्परा, शिक्षा, सामाजिक स्थिति, आय, वातावरण, शारीरिक विशेषताओं, संबैसात्मक स्थिरता, व्यक्तिगत रुचियों, अभिवृत्तियों, समायोजन की समस्या आदि का पता लगाया जाता है। जैसे- परिवार, पड़ोसी, विद्यालय अध्यापक, मित्र समूह आदि से। क्योंकि सत्य सूचना के आधार पर ही प्रमाणीकृत बनाया जा सकता है।

7. मनोविश्लेषण विधि :-

इस विधि द्वारा व्यक्ति परीक्षण का ज्ञेय सिग्मण्ड फ्रायड को जाना जाता है। विकासत्मक इतिहास, शिक्षा इतिहास, परिवार की स्थिति, वैवाहिक स्थिति, व्यक्तित्व की शीलगुण रुचि के जनक फ्रायड ने इस विधि के द्वारा व्यक्ति की रुद्धाओं, आशाओं, चिन्ताओं को जानने का प्रयास किया। इसकी दो प्रमुख विधियाँ हैं— (i) स्वतन्त्र साधक्य विधि (ii) स्वप्न विश्लेषण विधि।

8. प्रक्षेपण विधि :-

प्रक्षेपण विधि व्यक्ति परीक्षण की सबसे अधिक उपयोगी विधि है। जहाँ व्यक्ति के ज्ञान-बुझकर झूठ बोलने की सम्भावना बढ़ जाती है, ऐसे प्रक्षेपण विधि में व्यक्ति का तथा उसके प्रति होने वाली प्रतिक्रिया का विश्लेषण कर व्यक्ति का मापन किया जाता है। व्यक्ति मापन के लिए मनोवैज्ञानिकों ने कई तरह की प्रक्षेपण विधि का वर्णन किया है।

व्यक्तित्व मापन की आलोचनात्मक विश्लेषणः—

व्यक्तित्व मापन (Personality Assessment) का आलोचनात्मक विश्लेषण दर्शाता है कि स्व-रिपोर्ट (Self-report) और प्रक्षेपी (Projective) परीक्षण जैसे तरीके व्यक्ति के गुणों (वहिमुखता भावुकता) को तो मापते हैं, लेकिन ये पूर्वाग्रहों (Social Desirability), झूठ बोलने की प्रवृत्ति (Social Desirability), और विश्वसनीय की कमी से ग्रस्त हैं। यद्यपि में मनोवैज्ञानिक निदान में सहायक हैं, फिर भी व्यक्तित्व की पहचान को केवल सांख्यिकीय या अवचेतन परीक्षणों के माध्यम से पूरी तरह समझना कठिन है।

● आत्म - पूर्वाग्रह और झूठ (Self-Bias Social Desirability) :-

स्व-रिपोर्ट इन्वेंट्री (जैसे MMPI) में व्यक्ति भ्रमसर अपनी छवि बेहतर दिखाने के लिए जान-बूझकर गलत उत्तर देते हैं, जिससे परिणाम प्रभावित होते हैं।

• आलोचनात्मक विश्लेषण :-

यह व्यवहारिक है, लेकिन समय लेने वाला है। निरीक्षण करने वाले व्यक्ति (Observer) के पूर्वाग्रह (Bias) का प्रभाव पड़ सकता है।

—: निष्कर्ष :—

व्यक्तित्व की कोई एक मापन विधि पूर्ण नहीं है। एक प्रभावी मूल्यांकन के लिए इन विधियों के संयोजन (जैसे - साक्षात्कार + प्रश्नावली + भूवसोक्तन) का उपयोग किया जाना चाहिए, ताकि व्यक्ति की व्यापक और सटीक समझ प्राप्त हो सके।